B. A. History Hon's, Part : II

Paper: III, Unit: I (b), Date: 5. 10. 2020 Lecture No.: 7

Lession: तुर्कों के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक दशा

हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात भारत की राजनीतिक एकता छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। राजपूत काल के विभिन्न राजाओं ने शान-शौकत और दिखावे को अधिक महत्व दिया और उस युग में कोई भी ऐसा सम्राट नहीं हुआ जो समस्त उत्तरी भारत की राजनीतिक एकता को एक सूत्र में बाँध सकता था। तुर्कों के आक्रमण से पूर्व उत्तरी भारत की राजनीतिक स्थिति निम्न प्रकार है:-

कश्मीर: कश्मीर का मौर्य और कुषाणों ने राज्य किया था। छठी शताब्दी में हूण सरदार मिहिरकुल ने यहाँ अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। 19वीं शताब्दी तक यहाँ कर्कोट वंश का शासन रहा। इस वंश में अवंति-वर्मन और शंकर वर्मन नामक दो महान शासक हुए। सन् 1339 ई० के लगभग शाह मीर नामक एक स्थानीय मुसलमान ने कश्मीर में अपना शासन स्थापित कर लिया।

नेपाल: 7वीं शताब्दी में नेपाल तिब्बत राज्य के अन्तर्गत हो गया था परन्तु आठवीं शताब्दी में पुनः स्वतंत्र हो गया। सन् 479 ई० में यहाँ एक नए राजवंश की स्थापना हुई जिसका राज्य काफी समय तक रहा। Prof. R. S. Sharma के अनुसार नेपाल पर मुसलमानों का पहला आक्रमण 14वीं शताब्दी में तुगलक सुल्तानों के समय हुआ जिसके फलस्वरूप मुसलमानों ने नेपाल के मिथुल नामक प्रदेश को अपने अधीन कर लिया। उनकी राजधानी शमदाओं को घेर लिया।

आसाम: नेपाल की भाँति आसाम के सम्राट समुद्रगुप्त ने उसे अपने राज्य में मिला लिया था। सम्राट हर्ष के शासन काल में यहाँ भास्कर वर्मन का राज्य था। 13वीं शताब्दी में यहाँ आहोमों के एक नवीन वंश की स्थापना की।

कन्नौज: हर्ष के मृत्यु के बाद कन्नौज का महत्व बहुत कम हो गया था परन्तु आठवीं शताब्दी में यशोवर्मन नामक एक प्रतापी सम्राट हुआ। 750 ई० में कश्मीर के शासक ललितादित्य ने यशोवर्मन को वश में कर लिया और कन्नौज पर अधिकार कर लिया। 816 ई० में गुर्जर प्रतिहार वंश के नागभट्ट ने कन्नौज को जीतकर उसपर अपना अधिकार कर लिया। नागभट्ट ने 34 वर्ष तक कन्नौज पर राज्य किया और महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। 833 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। 835 ई० में मिहिर भोज राजा बना। 10C. ई० के लगभग कन्नौज के शासन की बागडोर प्रतिहार वंश के हाथ चली गई।

मालवा: मालवा राज्य मध्य भारत में था। हर्षवर्द्धन के शासनकाल में कन्नौज राज्य में शामिल हो गया, परन्तु 816 और 908 ई० के मध्य मालवा पर कन्नौज राज्य के प्रतिहारों का शासन रहा। भोज के दरबार में धनपाल, धनिक धनञ्जय पद्मगुप्त आदि विद्वान रहते थे। कहा जाता है कि उसने अपने राज्य में 104 मंदिरों का निर्माण करवाया था। Dr. D. S. Ganguly ने भी कहते हुए उसे मध्य भारत के सर्वोत्तम राजाओं के बीच स्थान दिया है। भोज के मृत्यु के पश्चात् अन्त में 1310 ई० में अलाउद्दीन ने उसे अपने राज्य में मिला लिया।

गुजरात: आठवीं शताब्दी में गुजरात भी कन्नौज साम्राज्य में सम्मिलित था। दसवीं शताब्दी के मध्य जब प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों की क्षीण हो गई तो सोलंकी वंश के साहसी युवक मूलराज ने गुजरात पर अपना अधिकार कर लिया। कहा जाता है कि उसने अपने समकालीन राजपूत राजाओं के साथ ही एक बार मोहम्मद गोरी को भी पराजित किया था। 995 ई० के लगभग उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात गुजरात की दशा दिन प्रतिदिन क्षीण होती गई। तत्पश्चात गुजरात में बघेल वंश के शासन की स्थापना हुई।

अजमेर: अजमेर के सांभर के चौहानों का राज्य था। चौहानों के विषय में डॉ० महोदय ने लिखा है कि- "Rajputs were the most valiant race" चौहान वंश का सबसे पहला शासक बीसलदेव चौहान था। उसने मुसलमानों से युद्ध किया, प्रतिहारों से दिल्ली छीनी और अपने राज्य की सीमा विस्तृत की।

पृथ्वीराज ने तराइन के युद्ध में 1191 ई० में मोहम्मद गोरी को पराजित किया। पृथ्वीराज बन्दी बना लिया गया और दिल्ली तथा अजमेर पर मुसलमानों का शासन स्थापित हो गया।

बुन्देलखण्ड। कन्नौज से कुछ दक्षिण की ओर बुन्देलखण्ड में चन्देलों का राज्य था। पहले चन्देल कन्नौज के राजपूतों के अधीन थे, परन्तु 800ई० के लगभग नन्नुक नामक एक राजपूत सरदार ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। परमाल और पृथ्वीराज के बीच घमासान युद्ध हुआ था, इस युद्ध में पृथ्वीराज की विजय हुई और महोबा पर उसका अधिकार हो गया।

मेवाड़। मेवाड़ में गहलौत वंश का शासक था। इस वंश का संस्थापक बापारावल था। मोहम्मद बिन-कासिम के आक्रमण के समय बापारावल बड़ी वीरता से लड़ा था। फलस्वरूप उसे 730ई० में मेवाड़ प्राप्त हुआ।

बिहार तथा बंगाल। हर्षवर्द्धन का राज्य बंगाल तक फैला हुआ था। आठवीं शताब्दी में गोपाल नामक एक व्यक्ति ने वहाँ पालवंश की नींव डाली और उसके उत्तराधिकारी धर्मपाल ने अपना प्रभाव कन्नौज से विंध्य तक फैला दिया। तत्पश्चात इस वंश का शासक देवपाल सिंहासनारूढ़ हुआ।

निष्कर्ष: उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि मुसलमानों के आक्रमण के समय समस्त उत्तरी भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था और सभी राज्य में अराजकता की स्थिति थी। भारत पर आक्रमण किया और गाजियों को धूल-धूसरित करके सफल हुए।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जमनगर